किछु 'वचन' : किछु अपन

(कन्नड़ वचनकारक मैथिली काव्यानुवाद)

'ड़ॉ. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' अधयक्ष, अनुप्रयुक्त भाषाविद्वान तथा
अनुवादविद्या विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय

अक्क महादेवीक वचन

1. अंग सँ वस्त्र खसि पड़ै
नारी-पुरुष लाज सँ मरै
आप्त-प्राण कैने छह प्रभु त्रिभुवन में
लज्जा तखन कत 'राखव गै'?
तोंही वाजह।
हे चेन्नामल्लिकार्जुन प्रभु,
विश्वक जँ नेत्र वनि करवह दर्शन
कोना हम झाँपव गै आत्मा कें
कतय नुकायव
प्रभु, तोंही वाजह।

2. तोरे जानि नरकहु में जँ जाइ हम
सैह त हमर मोक्ष हैत
तोरा नहि जानि, मुक्तिओ जँ भेंटत
से त हमर नरके हैत
ओ सुखक क्षणहु हैत दुःखक, जखन तो
हमरा नहि चाहवह
ओ दुःखो हैत सुखमय हमरा जखन
चाहवह तो
चेन्नामल्लिकार्जुन स्वामी हे,
जाहि वंधन सँ वाँधने छह तों हमरा
सैह त थिक हमर वंधन-मोचन।

3. हाथक मुट्ठी सँ छीनि सकै, छह
धन
कोना छीनाओत अंग-सपदा?
गहना वस्त्र ल सकैत छह छीनि
निर्वाणक जे नुआ छी ओढ़ने
फाड़ि की सकैत छैक क्यो तकरा?
मल्लिकार्जुन प्रभु केर प्रभा अंग पर चढ़ा
लाज-लज्जा सव गेल अछि
साड़ी-गहनाक आव कोन काज,
अरे पागल?

4. साँपक विष-दंत तोड़ि दहक
त तकरा संग खेलो होइतह सुख-दायी
काय-विकार जँ तोड़ि सकवह
त काया-संग विता सकै' छह सनय
सुखकर
काया केर विकृति होइछ एना, जेना
जननी वनि गेलि होइथ राक्षसी।
चेन्नामल्लिकार्जुन -
'तोहर भक्त छथुन्ह जेसव हुनका लोकनिक
काया रहिये गेल छन्हि' - देखह,
एना नहि वाज' पड़ै तोरा।

5. देखह देखह दुर्दशा ओहिसवपर्वतक
जकरा सभक इच्छा छलैक केलत गगा
संगे
देखह दुर्दशा ओहिसव महारण्यक -
जकरा सभक इच्छा छल खेलवाक अग्नि
क संगे आर देखह दुर्दशा ओकरा
सभक-अन्हरिया रातिक
जकरा सभक इच्छा छलै' आलोकक संगे
खेलैवाक
तकर दुर्दशा दय सोचह जेसव गभीर अज्ञता
लए
खेलै चाहै छल ज्ञानहिक संग।
अहिना, हौ परासिवमूर्ति हरदेव,
हे मल्लिकार्जुन, देखह देखह
तकरासभक दुर्गति - हमर जन्म -
जन्मान्तरक
तोहर जंगम लिंगक संग
करै, छल क्रीड़ा जेसव...।

(आभारः डॉ. शिवराम भट्ट पडिक्कल)